

सूरह आला^[1] - 87

سُورَةُ الْأَعْلَى

सूरह आला के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

- इस में अल्लाह के गुण ((आला)) अर्थात् सर्वोच्च होने का वर्णन हुआ है इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस में आयत 1 से 5 तक अल्लाह के पवित्रता के गान का आदेश देते हुये उस के गुणों का वर्णन किया गया है ताकि मनुष्य अल्लाह को पहचाने।
- आयत 6 से 8 तक बह्दी को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की स्मरण-शक्ति में सुरक्षित किये जाने का विश्वास दिलाया गया है।
- आयत 9 से 15 तक में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को शिक्षा देने का आदेश देकर बताया गया है कि किस प्रकार के लोग शिक्षा ग्रहण करेंगे और कौन नहीं करेंगे और दोनों का परिणाम क्या होगा।
- अन्त में बताया गया है कि परलोक की अपेक्षा संसार को प्रधानता देना ग़लत है जिस के कारण मनुष्य मार्गदर्शन से वंचित हो जाता है। फिर कहा गया है कि यही बात जो इस सूरह में बताई गई है पहले के ग्रन्थों में भी बताई गई है।

1 इस सूरह में तीन महत्वपूर्ण विषयों की ओर संकेत किया गया है:

1- तौहीद (ऐकेश्वरवाद)

2- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये कुछ निर्देश।

3- परलोक (आखिरत)।

1- प्रथम आयत में तौहीद की शिक्षा को एक ही आयत में सीमित कर दिया गया है कि अल्लाह के नाम की पवित्रता का सुमरिण करो, जिस का अर्थ यह है कि उसे किसी ऐसे नाम से याद न किया जाये जिस में किसी प्रकार का दोष अथवा किसी रचना से उसकी समानता का संशय हो। इसलिये कि संसार में जितनी भी ग़लत आस्थाएँ हैं सब की जड़ अल्लाह से संबन्धित कोई न कोई अशुद्ध और ग़लत विचार है जिस ने उस के लिये अवैध नाम का रूप धारण कर लिया है। आस्था का सुधार सर्व प्रथम है और अल्लाह को मात्र उन्हीं शुभनामों से याद किया जाये जो उस के लिये उचित हैं। (तर्जुमानुल कुर्आन, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद)

- सहीह हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) दोनों ईद और जुमुआ में यह सूरह और सूरह ग़ाशिया पढ़ते थे। (सहीह मुस्लिम: 878)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- | | |
|---|--|
| 1. अपने सर्वोच्च प्रभु के नाम की पवित्रता का सुमरिण करो। | بِسْمِ اسْمِكَ الْأَعْلَى |
| 2. जिस ने पैदा किया और ठीक ठीक बनाया। | الَّذِي خَلَقَ فَسُوَّى |
| 3. और जिस ने अनुमान लगाकर निर्धारित किया, फिर सीधी राह दिखाई। | وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَى |
| 4. और जिस ने चारा उपजाया। ^[1] | وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَى |
| 5. फिर उसे (सुखा कर) कूड़ा बना दिया। ^[2] | فَجَعَلَهُ عُتَاءً أَحْوَى |
| 6. (हे नबी!) हम तुम्हें ऐसा पढ़ायेंगे कि भूलोगे नहीं। | سَنُقَرِّئُكَ فَلَا تَنْسَى |
| 7. परन्तु जिसे अल्लाह चाहे। निश्चय ही वह सभी खुली तथा छिपी बातों को जानता है। | إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجُفَى وَمَا يَخْفَى |
| 8. और हम तुम्हें सरल मार्ग का | وَنُيِّرُكَ لِلْيُسْرَى |

- (2-4) इन आयतों में जिस पालनहार ने अपने नाम की पवित्रता का वर्णन करने का आदेश दिया है उस का परिचय दिया गया है कि वह पालनहार है जिस ने सभी को पैदा किया, फिर उन को संतुलित किया, और उन के लिये एक विशेष प्रकार का अनुमान बनाया जिस की सीमा से नहीं निकल सकते, और उन के लिये उस कार्य को पूरा करने की राह दिखाई जिस के लिये उन्हें पैदा किया है।
- (4-5) इन आयतों में बताया गया है कि प्रत्येक कार्य अनुक्रम से धीरे धीरे होते हैं। धरती के पौधे धीरे धीरे गुंजान और हरे भरे होते हैं। ऐसे ही मानवी योग्यतायें भी धीरे धीरे पूरी होती हैं।

साहस देंगे।^[1]

9. तो आप धर्म की शिक्षा देते रहें। अगर शिक्षा लाभदायक हो।
10. डरने वाला ही शिक्षा ग्रहण करेगा।
11. और दुर्भाग्य उस से दूर रहेगा।
12. जो भीषण अग्नि में जायेगा।
13. फिर उस में न मरेगा न जीवित रहेगा।^[2]
14. वह सफल हो गया जिस ने अपना शुद्धिकरण किया।
15. तथा अपने पालनहार के नाम का स्मरण किया, और नमाज़ पढ़ी।^[3]
16. बल्कि तुम लोग तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो।
17. जबकि आखिरत (परलोक) का जीवन ही उत्तम और स्थाई है।
18. यही बात प्रथम ग्रन्थों में है।

فَذَكِّرْ إِنْ نَفَعَتِ الذِّكْرَىٰ ۝

سَيَذَكِّرُ مَنْ يَخْشَىٰ ۝

وَيَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ۝

الَّذِي يَصُلِّي الْمَاءَ الذَّكَرَىٰ ۝

ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ۝

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّىٰ ۝

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّىٰ ۝

بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝

وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ لَلْغُثِ الْأَوَّلَىٰ ۝

- 1 (6-8) इन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह निर्देश दिया गया है कि इस की चिन्ता न करें की कुर्आन मुझे कैसे याद होगा, इसे याद कराना हमारा काम है, और इसका सुरक्षित रहना हमारी दया से होगा। और यह उसकी दया और रक्षा है कि इस मानव संसार में किसी धार्मिक ग्रन्थ के संबंध में यह दावा नहीं किया जा सकता कि वह सुरक्षित है, यह गर्व केवल कुर्आन को ही प्राप्त है।
- 2 (9-13) इन में बताया गया है कि आप को मात्र इसका प्रचार प्रसार करना है। और इस की सरल राह यह है कि जो सुने और मानने को तैयार हो उसे शिक्षा दी जाये। किसी के पीछे पड़ने की आवश्यकता नहीं है। जो हत भागे हैं वही नहीं सुनेंगे और नरक की यातना के रूप में अपना दुष्परिणाम देखेंगे।
- 3 (14-15) इन आयतों में कहा गया है कि, सफलता मात्र उन के लिये है जो आस्था, स्वभाव तथा कर्म की पवित्रता को अपनायें, और नमाज़ अदा करते रहें।

19. (अर्थात्) इब्राहीम तथा मूसा के ग्रन्थों में^[1]

صُفِّىٰ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ

1 (16-19) इन आयतों का भावार्थ यह है कि वास्तव में रोग यह है कि काफ़िरों को सांसारिक स्वार्थ के कारण नबी की बातें अच्छी नहीं लगती। जब कि परलोक ही स्थायी है। और यही सभी आदि ग्रन्थों की शिक्षा है।